मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा बिल पारित

१० दिसंबर, २००२ को मॉरीशस की संसद् में हिंदी प्रचारिणी सभा बिल पारित किया गया। यह न केवल हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस वरन् संपूर्ण हिंदी वैश्विक जगत् के लिए गौरव की बात है। इस बिल के पारित होने से हिंदी प्रचारिणी सभा को और उसके द्वारा आयोजित परीक्षाओं व प्रमाण-पत्रों को अतिरिक्त मान्यता प्राप्त हो गई है। यहाँ यह बताना भी प्रासंगिक है कि इस बिल ने हिंदी प्रचारिणी सभा को अब मॉरीशस में हिंदी की परीक्षा आयोजित करने का अधिकार दे दिया है। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना १२ जून, १९२६ को प्रसिद्ध भारतीय स्वाधीनता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के नाम पर 'तिलक विद्यालय' के रूप में हुई। '**भाषा गई तो संस्कृति भी गई**' के सूत्र वाक्य को केंद्र में रखकर हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में लगे सेवाभावी व्यक्तियों की इस संस्था ने तब से अब तक निरंतर हिंदी की ध्वजा को फहराने का गुरुतर दायित्व सफलतापूर्वक निभाया है।

सभा के कार्य

- ★ साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, सामाजिक, साहित्यिक, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर सम्मेलन व व्याख्यान आयोजित करना।
- ★ हिंदी विद्यालयों की स्थापना, प्रबंधन व उनका संबंधन करना।
- ★ पुस्तकालय व शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं उनका संचालन करना।
- ★ पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रकाशन व वितरण।
- ★ हिंदी के योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति देना।
- ★ समान उद्देश्योंवाली स्थानीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ विचारों का आदान-प्रदान करना।
- ★ हिंदी के लिए स्थानीय परीक्षाएँ आयोजित करना एवं पुरस्कार देना।
- ★ विदेशों से हिंदी की परीक्षाएँ आयोजित करना व संचालित करना।

सभा के वर्तमान सदस्य हैं—अजामिल माताबदल (अध्यक्ष), हनुमान दुबे गिरधारी (उपाध्यक्ष), धनराज शंभु (सचिव), जनार्दन कालीचरण (सहायक सचिव), टहल रामदीन (कोषाध्यक्ष), सत्यवती जगमोहन (सहायक कोषाध्यक्ष) और विद्यानंद रामफल, चंद्रदत्त अनत, लक्ष्मीप्रसाद मंगरू, दामोदर सोमॉरी, जवाहर प्रोआग तथा हरिनारायण सीता (सभी सदस्य)।

□

हिंदी-सेवी सम्मान समारोह

९ नवंबर को इटावा में 'इटावा हिंदी सेवा निधि' के तत्त्वावधान में हिंदी-सेवी सम्मान समारोह (सारस्वत सम्मान २००२) आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी थे। अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री बृजेश कुमार ने की। समारोह में अनेक हिंदी-सेवियों को सम्मानित किया गया।

'जनवाणी सम्मान' से कथाशिल्पी डॉ. महीप सिंह को, 'सेठ गोविंददास शासन-प्रशासन हिंदी-सेवा सम्मान' से श्री केशरी नाथ त्रिपाठी (अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश विधानसभा) को, 'श्यामनाथ कक्कड़ हिंदी विधि सेवा सम्मान' से श्री रामसूरत सिंह (अध्यक्ष, केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग) को 'श्रीमती कुमुद भूषण विशिष्ट हिंदी सेवा-सम्मान' से डॉ. प्रबोध झिंगन को, 'पं. रामकिंकर स्मृति मानस सेवा-सम्मान' से पं. शिवनाथ बाजपेयी को, 'गंगदेव सम्मान' से डॉ. विद्याकांत तिवारी को, 'भीमसेन शर्मा-गुलाब राय अलंकरण' से डॉ. रामस्वरूप दुबे को, 'बेदम वारसी-निसारसीमावी अलंकरण' से श्री कृष्ण कुमार तिवारी को, 'श्रीमन्नारायण-रत्नाकर शास्त्री अलंकरण' से श्री रशीद खाँ 'राही' को, 'शिशु-बल्लभ अलंकरण' से श्री कमलेश शर्मा को, 'शिवदत्त चतुर्वेदी-प्रह्लाद यदुवंशी अलंकरण' से श्रीमती राज अरोरा को, 'भटेले विश्वनाथ-शेख अतहर हुसैन अलंकरण' से श्री अशोक यादव को तथा 'हरयोगेंद्र प्रसाद बाजपेयी-राजनारायण दुबे अलंकरण' से श्री देवेश शास्त्री को सम्मानित किया गया।

□

विजय वर्मा कथा सम्मान

७ दिसंबर को मुंबई में विजय वर्मा कथा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने 'विजय वर्मा कथा सम्मान' 'मरुस्थल' तथा अन्य कहानियाँ के लेखक श्री जयशंकर को तथा 'हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार' कवि श्री संजय कुंदन को उनके कविता-संग्रह 'कागज के प्रदेश में' के लिए प्रदान किया। इन दोनों लेखकों को क्रमशः ग्यारह हजार तथा पाँच हजार रुपए की धनराशि, शॉल तथा स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री आलोक भट्टाचार्य ने किया। श्री संतोष श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण दिया। सर्वश्री भारत भारद्वाज, सुरेश सलित, लवलीन, माधव पंडित ने पुस्तक एवं लेखक के संबंध में टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीं।

इस अवसर पर श्री संतोष श्रीवास्तव के उपन्यास 'मालवगढ़ की मालविका' का लोकार्पण मुख्य अतिथि डॉ. गंगा प्रसाद विमल के हाथों हुआ। समारोह में बड़ी संख्या में महानगर के साहित्यकार एवं मीडिया से जुड़े साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे।

□

'न गोपी : न राधा' पुरस्कृत

३ दिसंबर को मुंबई में डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर के प्रसिद्ध उपन्यास 'न गोपी : न राधा' को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम प्रो. विष्णुकांत शास्त्री ने 'घनश्यामदास सराफ पुरस्कार' प्रदान किया। इसी वर्ष इस उपन्यास को 'अखिल भारतीय समर साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

यह उपन्यास महाकवयित्री मीरा के अंतरंग जीवन पर प्रकाश डालता है। इसका अनुवाद उड़िया, मराठी, गुजराती और फ्रेंच भाषाओं में हो रहा है।

□

'राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार प्रदत्त'

पिछले कुछ वर्षों से पर्यटन संबंधी लेख लिख रहे श्री मंगतराम धस्माना को पर्यटन व संस्कृति मंत्रालय के पर्यटन विभाग द्वारा उनकी पुस्तक 'कोहरे से आमना-सामना' को 'राहुल सांकृत्यायन पर्यटन पुरस्कार

योजना' के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण पर्यटन विभाग में आयोजित हिंदी समारोह के दौरान दिया गया।

☐

सम्मान पर्व एवं लोकार्पण आयोजित

३० नवंबर को नकोदर (पंजाब) में हिंदी पाक्षिक 'जनश्री' द्वारा कवि व चिंतक प्रो. मोहन सपरा की षष्टिपूर्ति के अवसर पर सम्मान पर्व में नागरिक अभिनंदन तथा उनकी काव्य पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. एस.पी. सिंह (उपकुलपति, गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर) तथा सम्मानित अतिथि सर्वश्री संसार चंद, रमेश कुंतल मेघ, के.के. दीपक, ओंकार राही थे। विशिष्ट अतिथि श्रीवर्द्धन कपिल थे। इस अवसर पर सर्वश्री एस.पी. सिंह, संसार चंद, रमेश कुंतल मेघ, ओंकार राही, तरसेम गुजराल, विजय रिखी, कँवर इम्तियाज, हरमहेंद्र सिंह बेदी, विनोद शाही, रामेंद्र जाखू, सुरेश सेठ, श्रीवर्द्धन कपिल, सुभाष रस्तोगी, सुरेश वात्स्यायन, यज्ञदत्त जिज्ञासु, धनीराम और गुरुचरण अरोड़ा ने प्रो. मोहन सपरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर डॉ. तरसेम गुजराल द्वारा संपादित प्रो. मोहन सपरा की कविताओं का कविता-संकलन 'सुर्खियों में है कोई बात', निंदर घुघियानवी द्वारा उनकी कविताओं का पंजाबी में अनुवादित कविता-संकलन 'हवा वांग' और प्रो. राजन कपूर द्वारा सपरा की कविताओं का प्रतिनिधि अंग्रेजी संकलन 'स्काई द लिमिट' का लोकार्पण किया गया।

☐

बाल साहित्य पुरस्कारों की घोषणा

बाल साहित्य का सबसे बड़ा राष्ट्रीय पुरस्कार 'पं. सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य पुरस्कार' वर्ष २००२ के लिए श्री संजीव जायसवाल 'संजय' के बाल उपन्यास 'हवेली' एवं श्री पुष्कर द्विवेदी के बाल कथा-संग्रह 'प्रतिनिधि बाल कहानियाँ' को संयुक्त रूप से प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार राशि ग्यारह हजार रुपए है। इसी तरह महिला बाल लेखन के लिए एडवोकेट भँवरलाल सिसोदिया के सहयोग से प्रदान किया जानेवाला प्रथम 'श्रीमती शकुंतला सिसोदिया बाल साहित्य पुरस्कार' सुश्री रमा तिवारी को उनकी पुस्तक 'प्यारी नानी कहो कहानी' पर प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार राशि पाँच हजार रुपए है। 'वरिष्ठ बाल साहित्यकार सम्मान' २००२ से डॉ. भैरुँलाल गर्ग तथा 'युवा बाल साहित्यकार सम्मान' २००२ से श्री जाकिर अली 'रजनीश' को सम्मानित किया जाएगा। सम्मान-स्वरूप दो हजार पाँच सौ एक रुपए की नकद धनराशि, प्रशस्ति-पत्र, अंगवस्त्रम् व प्रतीक-चिह्न प्रदान किया जाएगा।

☐

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' को 'मधुर स्मृति पुरस्कार'

२४ नवंबर को प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. राम सिंहासन सहाय 'मधुर' की स्मृति में नागरी बाल साहित्य संस्थान, बलिया द्वारा दिया जानेवाला 'मधुर स्मृति पुरस्कार' इस वर्ष सन् २००२ के लिए श्री अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' की बाल साहित्य की पुस्तक 'विज्ञान की बातें' पर दिया गया है। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री गणेश दत्त दुबे ने श्री अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' को शॉल ओढ़ाकर तथा प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक-चिह्न, सरस्वतीजी की प्रतिमा एवं एक हजार एक रुपए नकद प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मधुरजी की समस्त रचनाओं के संग्रह 'मधुर ग्रंथावली' का विमोचन डॉ. राष्ट्रबंधु ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री राजेंद्र दुबे, मोहम्मद अरशद खान, मोहम्मद साजिद खान, रमा सिंह, शैल तथा सतीश चंद्र भगत को भी सम्मानित किया गया। अध्यक्षता श्री सत्य प्रकाश श्रीवास्तव ने तथा संचालन श्री अनंत प्रसाद 'राम भरोसे' ने किया।

☐

परिषद् युवा पुरस्कार

भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता द्वारा हिंदी और बँगला के युवा लेखन को रेखांकित करनेवाले 'परिषद् युवा पुरस्कार' वर्ष २००२ के लिए हिंदी के युवा कवि श्री सुंदर चंद ठाकुर और बँगला के श्री अनिश्चय चक्रवर्ती को देने का निर्णय किया गया है। दोनों रचनाकारों को पुरस्कारस्वरूप ग्यारह हजार रुपए का चेक, शॉल और प्रशस्ति-पत्र दिया जाएगा।

☐

पं. केशरीनाथ त्रिपाठी साहित्य समारोह

उ.प्र. विधानसभाध्यक्ष पं. केशरीनाथ त्रिपाठी के अड़सठवें जन्मदिवस पर भारती परिषद्, प्रयाग की ओर से उनकी साहित्य सेवाओं को केंद्र में रखकर ९-१० नवंबर को द्विदिवसीय साहित्य-समारोह का आयोजन किया गया। त्रिपाठीजी के हाल ही में प्रकाशित दूसरे काव्य-संग्रह 'आयुपंख' पर छप्पन विद्वानों के समीक्षात्मक लेखों के पुस्तकाकार संग्रह का लोकार्पण भी इस अवसर पर किया गया। कार्यक्रम में अनेक साहित्यकारों का सम्मान भी पं. त्रिपाठीजी द्वारा प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न तथा अंगवस्त्रम् देकर किया गया। सम्मानित होनेवालों में सर्वश्री कन्हैयालाल नंदन, ममता कालिया, बालशौरि रेड्डी, विश्वंभर अरुण प्रमुख थे। ☐

प. बंगाल राज्य स्तरीय हिंदी राजभाषा कार्यशाला

नेहरू युवा केंद्र संगठन, प. बंगाल राज्य के क्षेत्रीय समन्वयकों, युवा समन्वयकों, लेखा लिपिकों एवं पी.ओ. (एन.आर.सी.) की दो दिवसीय हिंदी राजभाषा कार्यशाला १४ से १५ नवंबर को नेहरू युवा केंद्र, जलपाईगुड़ी में संपन्न हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुब्रतो गुप्ता ने हिंदी राजभाषा कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला में मंडल निदेशक, अतिथियों एवं संदर्भ व्यक्तियों के अतिरिक्त कुल पचास प्रतिभागियों ने भाग लिया। संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्री एन.सी. पांडे एवं हिंदी विशेषज्ञ के रूप में श्री जे.एल. मिश्र का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में श्री एम.आर. शास्त्री ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। ☐

राष्ट्रीय विचार मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

वैचारिक एवं साहित्यिक संस्था 'राष्ट्रीय विचार मंच' एवं उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के संयुक्त तत्त्वावधान में १६ एवं १७ नवंबर को नई दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन केंद्रीय रेल मंत्री श्री नीतीश कुमार ने किया। मंच के

महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने विषय-प्रवर्तन किया। स्वागताध्यक्ष तथा दि.न.नि. के पार्षद श्री ईश्वर गोयल ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि भारतीय थल सेना के जनरल एन.एस. मलिक थे। कार्यक्रम में केरल के रचनाकार डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर तथा चेन्नई की डॉ. कोकिला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता मंच के अध्यक्ष श्री यू.सी. अग्रवाल ने की। संचालन श्री सिद्धेश्वर तथा डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव ने किया। द्विदिवसीय विभिन्न सत्रों में विभिन्न विषयों—'सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सद्‌भाव के बिना राष्ट्रीय एकता खतरे में', 'वैश्वीकरण और आतंकवाद : आज की चुनौती', 'बढ़ती आबादी पर अंकुश में युवाओं की भूमिका', 'भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति और राष्ट्रीय नीति' पर चर्चा हुई।

समापन सत्र में न्यायमूर्ति स्व. बी.एल. यादव (मरणोपरांत), श्री किशन पटनायक तथा डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर को क्रमश: 'विचाररत्न', 'विचारभूषण' एवं 'विचारश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

☐

'मसि कागद' का पंचम वार्षिकोत्सव

साहित्यिक पत्रिका 'मसि कागद' का पंचम वार्षिकोत्सव १७ नवंबर को रोहतक में आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्र त्रिखा ने की। मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल मलिक तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. हरिश्चंद्र वर्मा थे। कार्यक्रम में सर्वश्री कमलेश भारतीय, सुभाष रस्तोगी तथा 'मसि कागद' के संपादक डॉ. श्याम सखा 'श्याम' ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर डॉ. चंद्र त्रिखा ने 'मसि कागद' के पंचम वर्ष के प्रथम अंक तथा श्री वीरेंद्र सिंह गुंबर की कथा-पुस्तक 'करील के पेड़' का विमोचन किया। समारोह में कवि गोष्ठी भी हुई, जिसमें सर्वश्री कुँअर 'बेचैन', अर्चना ठाकुर, सत्यपाल 'सत्यम', माधव कौशिक तथा श्याम सखा 'श्याम' ने अपनी रचनाएँ सुनाईं।

☐

स्व. गोपी वल्लभ गोस्वामी स्मृति कहानी संगोष्ठी संपन्न

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् (राजस्थान) की ओर से ९-१० नवंबर को बीकानेर में स्व. गोपीवल्लभ गोस्वामी स्मृति कहानी संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका केंद्रीय विषय 'राजस्थान की समसामयिक हिंदी कहानियाँ' था। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. मथुरेशनंदन कुलश्रेष्ठ ने तथा उद्‌घाटन मुख्य अतिथि डॉ. देवीप्रसाद गुप्त ने किया। संगोष्ठी में डॉ. सरला अग्रवाल की कहानी 'वटवृक्ष', श्री हनुमान दीक्षित की कहानी 'खाली हाथ', श्री अरविंद सोरल की कहानी 'बेईमान', मेजर रतन जांगिड़ की कहानी 'माँ से कहना' और प्रकाश विकल 'धर्म', श्रीमती ज्योति शुक्ला एवं विजय कोचर की कहानियाँ क्रमश: 'कोट', 'कौन जीता' और 'जीवट' का वाचन किया गया। डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' ने 'राजस्थान की समसामयिक कहानियाँ' विषय पर पत्र-वाचन किया। इस अवसर पर डॉ. सरला अग्रवाल की पुस्तकों 'टाँय-टाँय फिस्स' और 'मंजिल की ओर' का लोकार्पण भी किया गया। ☐

'गिलिगडु' पर चर्चा गोष्ठी

गत दिनों साहित्यिक संस्था 'अभिव्यक्ति' की ओर से नई दिल्ली में प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्‌गल के सद्य: प्रकाशित उपन्यास 'गिलिगडु' पर चर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पाठिकाओं ने उपन्यास पर चर्चा की, जिनमें सुश्री त्रिशला जैन, सुनीता बिंदल, साधना, कुसुम, रीता जैन, राजेश्वरी अग्रवाल आदि सहभागी हुईं। कार्यक्रम में लेखिका स्वयं भी उपस्थित थीं।

☐

स्व. शिवमंगल सिंह 'सुमन' को श्रद्धांजलि

३० नवंबर को नोएडा में सांस्कृतिक संस्था सूर्या संस्थान द्वारा दिवंगत कवि श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री श्याम विमल, दिविक रमेश, मदन लाल वर्मा 'क्रांत', बाबा कानपुरी, देवेंद्र कुमार मित्तल, सोमदत्त दीक्षित एवं आशारानी व्होरा ने स्व. 'सुमन' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अपने संस्मरण सुनाए। सभा में अनेक बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

☐

हाइकू संगोष्ठी आयोजित

भारती परिषद्, प्रयाग की ओर से इलाहाबाद में पहली बार एक हाइकू संगोष्ठी का संयोजन ९ नवंबर को किया गया। विषय था—'हाइकू कविताओं में जीवन-मूल्य'। संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' थे। विषय प्रवर्तन डॉ. सुरेंद्र वर्मा ने किया। गोष्ठी में श्री नलिनीकांत, डॉ. उर्मिला कौल, डॉ. मुन्नी लाल उपाध्याय ने अपनी टिप्पणियाँ दीं। संचालन डॉ. सियाराम शरण शर्मा ने किया।

☐

लोकार्पण

गत दिनों नई दिल्ली में विश्व हिंदी समिति, न्यूयॉर्क तथा रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में अमेरिकी प्रवासी भारतीय डॉ. अंजना संधीर तथा श्री वेद प्रकाश सिंह द्वारा संपादित 'सात समुंदर पार से' काव्य-संकलन का लोकार्पण मुख्य अतिथि डॉ. श्याम सिंह शशि ने किया। समारोह में सर्वश्री बनारसी सिंह, जय प्रकाश भारती तथा जयपाल तरंग ने संकलन के संबंध में अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर एक काव्य-गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें सर्वश्री असीस शुक्ल, शरदेंदु शर्मा, विनोद शर्मा, इंद्र सेंगर, अर्चना त्रिपाठी, हीरालाल बाछोतिया, महेंद्र शर्मा 'सूर्य', विजय गुप्त, अलकेश त्यागी, प्रेमा खुल्लर, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, उर्मिल सत्यभूषण, सोमदत्त शर्मा तथा मुसाफिर देहलवी ने भाग लिया।

———— ❖ ————

गत दिनों लखीमपुर में हिंदी कवि श्री भोलानाथ शेखर की काव्यकृति 'तलवार चली' का लोकार्पण मुख्य अतिथि डॉ. बृजेंद्र अवस्थी के कर-कमलों से संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. राजबहादुर द्विवेदी थे। इस अवसर पर डॉ. गणेश दत्त सारस्वत एवं कृष्णा व राम गोपाल शेखर ने

अपने विचार व्यक्त किए। पं. सत्यधर शुक्ल ने अतिथियों का स्वागत-सम्मान प्रतीक-चिह्न देकर किया। कवि श्री भोलानाथ शेखर का जीवन परिचय पं. सत्यधर शुक्ल ने प्रस्तुत किया। श्री ओम प्रकाश गुप्त तथा डॉ. कामिनी महेंद्र ने अपने समीक्षात्मक विचार प्रस्तुत किए।

———— ❖ ————

गत दिनों भोपाल में कवि शैलेंद्र चौहान के कविता-संग्रह 'श्वेत-पत्र' का विमोचन मुख्य अतिथि समीक्षक डॉ. विजय बहादुर सिंह ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हि.सा. सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अक्षय कुमार जैन ने की। इस अवसर पर शैलेंद्र चौहान द्वारा संग्रह की कविताओं का पाठ किया गया। सर्वश्री महेंद्र नेह, श्री बसंत त्रिपाठी, शिवराम, विजय बहादुर सिंह, शशांक एवं अक्षय कुमार जैन ने पुस्तक पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं।

———— ❖ ————

गत दिनों हिंदी इलाहाबाद में आयोजित एक अनौपचारिक समारोह में और बँगला के कथाकार श्री सुभाष चंद्र गांगुली के हिंदी कथा-संग्रह 'सवाल तथा अन्य कहानियाँ' का लोकार्पण पत्रकार डॉ. कन्हैयालाल नंदन ने किया। अध्यक्षता प्रसिद्ध कहानीकार श्री रवींद्र कालिया ने की। कथा लेखिका श्रीमती ममता कालिया ने श्री गांगुली के कथा-संसार पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह का संचालन श्री यश मालवीय ने किया।

———— ❖ ————

२७ नवंबर को नई दिल्ली में लेखिका सुश्री मनीषा की पुस्तक 'हम सभ्य औरतें' का लोकार्पण डॉ. नामवर सिंह ने किया। इस अवसर पर विषय-प्रवर्तन कथाकार श्रीमती नासिरा शर्मा ने किया। उपन्यासकार श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा एवं श्री अरविंद जैन ने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए।

———— ❖ ————

५ दिसंबर को नई दिल्ली में नवोदित लेखक संघ के तत्त्वावधान में डॉ. मनोज कुमार कैन द्वारा संपादित काव्य-संकलन 'मुक्ति' का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. राज बुद्धिराजा ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य निशांतकेतु ने की। 'मुक्ति' काव्य-संकलन में देश भर के कुल अस्सी कवियों की कविताएँ संकलित हैं। इस अवसर पर संकलन के सबसे कम उम्र के कवि के रूप में श्री मयंक 'श्रीमुख' को संकलन के प्रकाशक हिंदी पत्रकारिता एवं भाषा विकास संस्थान की ओर से प्रशस्ति-पत्र और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। संचालन श्री मदनलाल आजाद ने किया।

———— ❖ ————

गत दिनों नई दिल्ली में उपन्यासकार डॉ. भगवतीशरण मिश्र के दो खंडीय उपन्यास 'पावक' एवं 'अग्निपुरुष' का लोकार्पण केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी एवं प्रसिद्ध विधिवेत्ता व सांसद डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने पुस्तक परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अनेक साहित्यकार, विचारक एवं प्रकाशक उपस्थित थे।

———— ❖ ————

गत दिनों इलाहाबाद में डॉ. सुरेंद्र वर्मा की पुस्तक 'कला विमर्श एवं चित्रांकन' का लोकार्पण न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण अग्रवाल ने किया। डॉ. उदयशंकर तिवारी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। सर्वश्री देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव 'देवेश', हरिमोहन मालवीय, डी.एन. द्विवेदी, स्वालेह फातिमा काजमी एवं कल्पना सहाय ने पुस्तक एवं लेखक पर अपनी टिप्पणियाँ दीं।

———— ❖ ————

२४ नवंबर को गाजियाबाद में उपन्यासकार श्रीमती जोगेश्वरी सधीर के उपन्यास 'जवाकुसुम' एवं संस्मरण 'पत्ता टूटा डाल से' का लोकार्पण वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद मिश्र एवं उपन्यासकार श्री से.रा. यात्री के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। अध्यक्षता श्री से.रा. यात्री ने की।

इस समारोह में 'भगवत प्रसाद स्मृति कहानी प्रतियोगिता २००२' के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में श्री मनोज श्रीवास्तव की कहानी 'अरे ओ बुड़भक बँभना' ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री सुरेंद्र कुमार अरोड़ा की 'बिटिया' कहानी पर द्वितीय व श्री रविंद्र कांत त्यागी की 'प्रोफेसर विद्रोही' पर तृतीय पुरस्कार मिला। सुश्री पुष्पा रघु की 'अंतहीन सिलसिला' व श्री अखिलेश कुमार की 'पाँचवें माले की नायिका' पर 'सांत्वना पुरस्कार' प्रदान किए गए। अगले क्रम में स्थानीय साप्ताहिक समाचार-पत्र 'विक्रम शिला' के प्रकाशन की प्रथम वर्षगाँठ पर इसके नवीनतम अंक का लोकार्पण मंचासीन साहित्यकारों ने किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। संचालन श्री मोहन द्विवेदी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नीलम जैन ने किया। ☐

साहित्यिक क्षति

डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' नहीं रहे

हिंदी साहित्य के वरिष्ठतम कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का दिनांक २७ नवंबर, २००२ को उज्जैन में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वे छियासी वर्ष के थे। उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगरपुर में १६ जुलाई, १९१६ को जनमे और बाद में मध्य प्रदेश के मालवा में आकर बस गए डॉ. सुमन नेपाल में भारत सरकार के सांस्कृतिक दूत सहित कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। वे उज्जैन की हर सांस्कृतिक गतिविधि के प्रणेता एवं अंत समय तक कालिदास समारोह समिति के अध्यक्ष तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के न्यासी सदस्य भी रहे। उन्हें भारत सरकार ने 'पद्मश्री' एवं 'पद्मविभूषण' जैसे सम्मानों से सम्मानित किया।

दिवंगत आत्मा को 'साहित्य अमृत' परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि। ☐